International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(III), April - June, 2023, pp. 116-118

ग्रामीण आर्थिक विकास में महिलाओं का योगदान

राजेश जाट*

सार

ग्रामीण क्षेत्रों के विकास में ग्रामीण महिलाओं का योगदान अत्यन्त उपयोगी एवं महत्वपूर्ण रहा हैं संयुक्त राष्ट्र वर्ष 2008 से प्रत्येक वर्ष 15 अक्टूबर को ग्रामीण महिला दिवस के रूप में मनाता है। किसी क्षेत्र के सामाजिक विकास में महिलाओं के सहयोग के बिना पुरूषों के द्वारा किया गया कोई भी योगदान अपूर्ण हैं भारत में ग्रामीण महिलाओं ने अपने क्षेत्र में सामाजिक विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं लेकिन हमारे ग्रामीण समाज में महिलायें अभी भी पिछड़ी हुई हैं ग्रामीण क्षेत्रों में महिला साक्षरता का प्रतिशत कम है। उनका जीवन पारिवारिक एवं घरेलू कार्यों में ही व्यतीत हो जाता है। आज भारत में स्त्रियों की स्थिति को सुधारने की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण कदम निर्धनता एवं उच्च प्रजनन क्षमता के दोषपूर्ण कुचक्र को तोड़ना जरूरी है। पिछले करीब 40 वर्षों के नियोजित आर्थिक विकास के बावजूद ग्रामीण स्त्रियों की सामाजिक स्थिति में अधिक सुधार नहीं हुआ हैं। आज यदि ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों को वस्तुओं के उत्पादन, उनकी खरीद–बेच, पोषण, स्वच्छता, और स्वास्थ्य, भोजन बनाने तथा बच्चों की उचित तरीके से देखभाली करने के सम्बन्ध में अनौपचारिक शिक्षा की सुविधायें प्रदान की जायें तो गाँवों में स्त्रियों की स्थिति को सुधारा जा सकता हैं। हमारे समाज में महिलाओं को प्रत्येक दृष्टि से उपेक्षा की जाती है। पुरूषों एवं लड़कों को आय कमाने वाले बुढ़ापे का सहारा तथा वंश रक्षक माना जाता है। लड़कियों के खाने–पीने एवं स्वास्थ्य के प्रति अधिक ध्यान नहीं दिया जाता हैं हमारे समाज में लड़कियों को नौकरी करना आज भी अच्छा नहीं माना जाता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरकार द्वारा महिला वर्ग के उत्थान हेतु विभिन्न विकास कार्यो को क्रियान्वित किया गया है। इन कार्यक्रमों के फलस्वरूप स्त्री समाज के सामाजिक, आर्थिक जीवन में उत्थान दिखाई पड़ता है। इनके सामाजिक, आर्थिक विकास के लिए एक राष्ट्रीय विचारधारा बनाने की नितांत आवश्कता है तथा सामाजिक न्याय की प्रक्रिया को इनके लिए सुलभ बनाकर ही स्त्री जाति के विकास में तीव्रता लायी जा सकती है। सरकार से रोजगार उपलब्ध कराने के लिए अभी तक स्त्री समाज को उचित सार्थक सहयोग प्राप्त नहीं हो पाये हैं। विकास की दर में भी महिलाओं का योगदान अभी भी कम है। बहुत ही कम स्त्रियाँ शैक्षिक प्रतिस्पर्धाओं में आगे आ रहे हैं। भारत सरकार ने ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए मनरेगा जैसे कार्यक्रम चलायें हैं। इन योजनाओं का सबसे अधिक लाभ ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं ने उठाया है।

शब्दकोषः *आर्थिक परिस्थिति, सामाजिक न्याय।*

प्रस्तावना

किसी भी क्षेत्र की आर्थिक परिस्थितियों को उस स्थान की जलवायु सबसे अधिक प्रभावित करती है। किसी स्थान पर लम्बी अवधि के मौसम की औसत दशाओं को जलवायु कहा जाता है। जलवायु के अध्ययन में कई तत्व जैसे तापमान, वर्षा, वायुदाब, आर्द्रता आदि का अध्ययन किया जाता है।

* सहायक आचार्य, भूगोल, राजकीय महाविद्यालय, आसीन्द, भीलवाडा, राजस्थान।

जिस प्रकार हरियाणा की जलवायु अर्द्धशुष्क के अन्तर्गत आती है उसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र की जलवायु भी अर्द्धशुष्क जलवायु की श्रेणी में आती है। कोपेन के अनुसार चरखी–दादरी जिले की जलवायु ठीू प्रकार की है। जिसमें जाड़े की ऋतु शुष्क होती है साथ ही ग्रीष्मकाल में भी वर्षा अधिक नहीं होती है। वनस्पति मुख्यत स्टेपी प्रकार की पाई जाती है। वार्षिक वर्षा 40 सेमी. से 60 सेमी. होती है। ग्रीष्मकाल में औसत तापमान 32^0–34^0 सेण्टीग्रेड तथा शीत ऋतु मे 12^0 से 18^0 सेण्टीग्रेड तक रहता है। जिले को तीन प्रमुख ऋतुओं में विभाजित किया जाता हैं।

- ग्रीष्म ऋतु (मार्च से जून तक)
- वर्षा ऋतु (जुलाई–सितम्बर)
- शीत ऋतु
  - मानसून प्रत्यावर्तन काल (अक्टूबर से मध्य दिसम्बर)
  - शीत ऋतु (मध्य दिसम्बर से फरवरी)

आर्थिक कारक

किसी भी क्षेत्र में मानव का निवास उसकी आर्थिक क्रिया के स्तर और प्रकृति पर निर्भर करता है। विभिन्न भागों में मानव के जीविकोपार्जन के साधनों में पर्याप्त भिन्नता पाई जाती है इसका प्रभाव जनसंख्या के वितरण तथा घनत्व पर पडता है। ओद्योगिक उन्नति भी जनसंख्या के वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करती है। ओद्योगिक उन्नति किसी प्रदेश में कृषि की तुलना में अधिक जीवन में उद्योगों के क्रम में परिवहन एवं संचार के साधन, व्यापार बीमा बैकिंग, शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन, सुरक्षा आदि का उल्लेखनीय विकास होता है। ओद्योगिक केन्द्र नगरीय केन्द्रों के रुप में स्थापित हो जाते है तथा ग्रामीण जनसंख्या को आकर्षित करने लगते है।

सामाजिक कारक

जनसंख्या के वितरण तथा घनत्व पर सामाजिक रीति रिवाज, धार्मिक दृष्टिकोण, परम्पराओं, जीवन मूल्यों आदि का आंशिक प्रभाव पडता है। रुढ़िवादी समाजो में विवाह की अनिवार्यता, पुत्र सन्तान की चाह, बाल विवाह सन्तान को ईश्वरीय देन मानकर परिवार नियोजन उपायों का विरोध आदि कारणों से जनसंख्या तेजी से बढती है जिससे जनघनत्व बढता है।

जनांकिकीय कारक

जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्वि, नगरीकरण तथा प्रवास ऐसे प्रमुख कारक है। जिनसे जनसंख्या का वितरण एवम् घनत्व प्रभावित होता है। नगरीकरण की प्रवृति के कारण नगरों पर जनसंख्या भार बढ़ता जा रहा है।

जनसंख्या वृद्धि

जनसंख्या वृद्धि का अर्थ अधिकतर एक क्षेत्र विशेष में किसा समय रह रहे लोगो की संख्या में परिवर्तन से है। जनसंख्या वृद्धि को प्रतिशत परिवर्तन के रूप में मापने के लिए कुल संख्या में परिवर्तन को पहले उस स्थन पर रह रही जनसंख्या से विभाजित कर लिया जाता है तथा फिर उसे 100 से गुणा किया जाता है। जनसंख्या भूगोल वेताओं ने अधिकतर जनसंख्या –परिवर्तन का अध्ययन 10 वर्षों के समय के लिए किया है। उत्पादकता, मर्त्यता तथा प्रवास जनसंख्या वृद्धि के तीन मुख्य घटक है। किसी भी क्षेत्र के जनसंख्या वृद्धि को मापने के लिए उत्पादकता, मर्त्यता तथा प्रवास का सही मापन आवश्यक है। यहाँ उत्पादकता जिसका सम्बन्ध जन्म से है तथा प्रजनन क्षमता जिसका सम्बन्ध सम्पूर्ण प्रजनन–अवधि में स्त्रियों की प्रजनन क्षमता से है के अन्तर को समझ लेना आवश्यक है। प्रजनन क्षमता का मापन इतना सरल नहीं है।

निष्कर्ष

जिले के आर्थिक विकास के लिए परिवहन के साधन बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। आधुनिक समय में परिवहन के साधनों का विस्तार को आर्थिक समृद्धि का सूचक मानाजाता है। चरखी–दादरी जैसे कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था वाले जनपद में परिवहन के साधन एक प्राथमिक आवश्यकता के रूप में महत्त्व रखते हैं। अधिक एवं अच्छी परिवहन सुविधाओं का विकास होने पर ही किसान अपनी उपज उचित कीमत पर बाजार में बेच सकता है और अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकता है। जिले का औद्योगिक विकास, बहुमूल्य खनिज सम्पत्ति का उपयोग, कृषि कार्यों से सम्बन्धित, आवागमन तथा कुशल प्रशासन केवल परिवहन के साधनों के विकास पर ही निर्भर है। जिले में मुख्य परिवहन के साधनों के रूप में रेलमार्ग तथा सड़कें है। इसका अधिकतर भाग रेतीला होने के कारण ऊँट–गाड़ी की बहुतायता है तथा आधुनिक यातायात के माध्यम के रूप में कच्ची एवं पक्की सड़कों का कार्य प्रगति पर है। विलियम फिन्च के अनुसार सैकड़ो वर्षों पूर्व, पूर्वी हरियाणा में सड़कों का कहीं नामोनिशान नहीं था। मात्र पगडंडियों के रूप में मार्ग रेत के कारण बनते बिगड़तें रहते थे। सामान्यताया यातायात के साधनों के रूप में ऊँट–गाड़ी और बेल–गाड़ी का प्रयोग रेगिस्तानी भागों में होता था। पहाड़ी भागों में घोड़ो और बैलों का उपयोग यातायात के रूप में लिया जाता था। सड़क यातायात 19वीं शताब्दी में जिले में सड़कों का विकास धीमी गति से प्रारम्भ हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात राज्य में यातायात संगठनों के ध्यान नहीं देने से सड़कों का विकास नहीं हुआ। जिस कारण जिले के अनेक गांव विकास के स्तर से अछुते रहे। जिले के विभिन्न क्षेत्रों में औद्योगिक, कृषि तथा खनिज संसाधनों के बढ़तेउ पयोग तथा विकास के कारण परिवहन के साधनों की आवश्यकता की माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है, जिनके पूर्ण किये जाने पर ही जिले के विकास की योजनाएं हो सकेगी और चरखी–दादरी प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. गौतम, नीरज कुमार : गाँवों का बदलता स्वरूप, अंक–07, वॉल्यूम–58, न.–12 कुरुक्षेत्र, अक्टूबर–2012, पृ. 37–42।
2. चन्द्र, अखिलेश : मिला रोजगार, रुका पलायन, अंक–04, वॉल्यूम–58, कुरुक्षेत्र, फरवरी–2012, पृ.14–19।
3. पटेल अमृत : कृषि क्षेत्र में महिलाएँ योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून–2012, पृ.–11–13।
4. फारुखी, उमर : महिला सशक्तिकरण में पंचायतीराज की भूमिका, अंक–07, वॉल्यूम–56, न.–12 कुरुक्षेत्र, अक्टूबर–2012, पृ. 37–42।
5. मोदी, अनीता : पर्यावरण संरक्षण में ग्रामीण महिलाओं का योगदान, अंक–07, वॉल्यूम–58, न.–08ए कुरुक्षेत्र, जून–2012, पृ. 26–30।
6- मोहन, ममता : सशक्तिकरण : एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण, योजना, वर्ष–56, अंक–6, जून–2012, पृ. 43–45।

❖◆❖